16.07.2020

बी० ए०-२ पार्ट-2
अर्थशास्त्र (प्र०) - द्वितीय पत्र
"Inflationary Gap
मुद्रा स्फीति अन्तराल (स्फीतिक अन्तराल)"

डॉ० विपिन कुमार
प्रो० अर्थशास्त्र विभाग
आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा
पी० पी० यू० पटना

प्रश्न :- स्फीतिक अन्तराल से आप क्या समझते हैं ? इसकी अवधारणा/कारण एवं दूर करने के उपाय बतावें।

उत्तर :- स्फीतिक अन्तराल (Inflationary Gap) :- "जब सरकारी व्यय सरकारी आय से अधिक हो जाता है तो इस अन्तर को 'स्फीतिक अन्तराल' कहा जाता है। क्योंकि सरकार इसकी पूर्ति नई मुद्रा-चलन में डालकर (नोटों की छपाई) या ऋण लेकर इस व्यय को पूरा किया जाता है।"

दूसरे शब्दों में कहें तो अर्थशास्त्र में एक मुद्रास्फीति अन्तर वह राशि है जिसके द्वारा वास्तविक घरेलू उत्पाद संभावित पूर्ण-रोजगार जी०डी०पी० से अधिक है। यह एक प्रकार का आउटपुट गैप है दूसरा एक मंदी का अन्तर है।"

'स्फीतिक अन्तराल' की अवधारणा की चर्चा सर्वप्रथम (John Maynard Keynes) जॉन मेनार्ड कीन्स ने वर्ष 1940 में की थी। इसलिए कि मुख्य रूप से J.M. Keynes ने वर्ष 1940 में युद्धकाल के बारे में वित्तीय समस्याओं के समाधान और अध्ययन हेतु नियोजित किया था। Keynes ने पूर्ण रोजगार संतुलन के स्तर से मुद्रा-स्फीति के अन्तर का विश्लेषण किया जबकि उनका अन्य विश्लेषण अंडर-रोजगार संतुलन पर आधारित हैं।

इस प्रकार, जब वास्तविक सकल मांग अनुमानित सकल मांग की तुलना में अधिक होती है और यदि अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार में चल रही थी, तो इसका अर्थ यह हुआ कि देश के नागरिक उत्पादकों की तुलना में अधिक वस्तुओं और सेवाओं की मांग कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में, एक मुद्रा स्फीति का अन्तर यह होता है कि तो अर्थव्यवस्था संतुलन स्तर से बाहर हो जाती है और वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य स्तर में वृद्धि की मांग और अपर्याप्त आपूर्ति के लिए (स्वाभाविक तौर पर या सरकारी हस्तक्षेप के द्वारा) वृद्धि होगी और कीमतों में इस वृद्धि को ही मांग-पुलिंग मुद्रास्फीति कहा जाता है।

उदाहरणस्वरूप, 'बूम बस्ट चक्र' के फलस्वरूप अधिकांश अर्थव्यवस्थाएँ स्वाभाविक रूप से 'मुद्रा स्फीति के अन्तराल' का अनुभव करती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका ने वर्ष 2006 में मुद्रास्फीति की (खाई) अन्तराल का अनुभव किया जब अर्थव्यवस्था फल-फूल रही थी, बेरोजगारी का स्तर कम था, मजदूरी की दरों में वृद्धि हुई और अधिक लोगों के पास जब नौकरी आया और उच्च क्रयशक्ति थी, जिससे मांग में वृद्धि हुई लेकिन मजदूरी में वृद्धि के कारण, व्यवसायियों के पास उत्पादन के लिए कम पैसा उपलब्ध था-- जिससे मांग के उच्च स्तर और आउटपुट के निम्न स्तर के बीच एक असंगति पैदा हुई। अब हम मुद्रा-'स्फीतिक अन्तराल' के कारणों की चर्चा करेंगे। 'Inflationary Gap (स्फीतिक अन्तराल) के निम्नांकित कारण हैं :-

मुद्रा-स्फीति की कमी तब होती है जब समग्र मांग अनुमानित मांग से अधिक होती

हैं, ~~जैसे~~ दो अलग-अलग कारणों से होती हैं:

(1) कुल माँग में वृद्धि : माँग में वृद्धि स्वाभाविक रूप से वास्तविक माँग और संभावित माँग के बीच एक विसंगति पैदा करेगी। अतिरिक्त माँग विभिन्न चीजों के कारण हो सकती है, जो दो अलग-अलग चीजों के कारण हो सकती है।

(2) कुल आपूर्ति में गिरावट : आपूर्ति में गिरावट स्वाभाविक रूप से वास्तविक माँग और संभावित माँग के बीच एक विसंगति पैदा करेगी। आपूर्ति कम होने के संभावित कारणों में शामिल हैं, बढ़े हुए टैरिफ, मजदूरी में वृद्धि या युद्धकाल (जब वाणिज्यिक वस्तुओं के उत्पादन के बजाय युद्ध के प्रयोजनों के लिए सुविधाओं का उपयोग किया जाता है)।

अब हम मुद्रा स्फीतिक अन्तराल (Inflationary Gap) के प्रतिबंध पर चर्चा करेंगे। सामान्यतः मुद्रा स्फीतिक अन्तराल (Inflationary Gap) को दो प्रमुख तरीकों से प्रतिबंधित किया जा सकता है; जिससे बाजार मूल्य में उच्च स्तर लाया जा सके।

(1) मौद्रिक नीति (Monetary Policy) : यह नीति केन्द्रीय बैंकों द्वारा आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए बनायी गयी नीतियाँ हैं। मुद्रा स्फीतीय अन्तराल (Inflationary Gap) का प्रबन्धन करने के लिए बैंक उधार लेने वाले पैसे को अधिक कठिन बनाने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि कर सकती हैं -- इससे धन की आपूर्ति को कम कर माँग की आपूर्ति में कमी लायी जाती है।

(2) राजकोषीय नीति (Fiscal Policy) : इस नीति के अन्तर्गत सरकार द्वारा पैसे की आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए एक रणनीति के तहत नियंत्रण किया जाता है। मुद्रा स्फीति संबंधी अन्तरालों का प्रबन्धन करने के लिए, सरकारें संविदात्मक राजकोषीय नीतियों को लागू कर सकती हैं। इसके लागू होने से धन की आपूर्ति कम होती है फलस्वरूप माँग स्वतः कम हो जाती हैं। इन नीतियों में सरकारी खर्च को कम करना और करों को बढ़ाना भी शामिल हो सकता है।

इसकी आलोचना विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने तरीके से की है:

(1) 'Milton Friedman' ने Keynsian मुद्रा स्फीतिक अन्तराल की आलोचना इस आधार पर की कि अन्तर विश्लेषण का उपयोग केवल विशेष परिस्थितियों में ही किया जा सकता है। उनके अनुसार, इस विश्लेषण में व्यापारिक चक्रों में बहुत अधिक सुधार नहीं किया गया।

(2) 'बेंट हेनसन' ने इसकी आलोचना इस आधार पर की है कि केवल

माल बाजार के अन्तराल के अपने विश्लेषण को सीमित करने के लिए कारक बाजार को छोड़ दिया। उनके अनुसार, माल और कारक बाजार दोनों में अधिक माँग के कारण यह अन्तर होता है।

(III) इसकी आलोचना Milton Friedman, Erik Lundberg और कई अन्य अर्थशास्त्रियों ने इसकी स्थिर प्रकृति दोष के कारण भी की थी। Keynes ने स्वयं इस दोष को पहचाना और प्राप्तियों तथा आगमों के बीच संबंधित 'समय अन्तराल' की शुरुआत की। और मुद्रास्फीति की गति का विचार पेश करते हुए कहा कि मुद्रास्फीति की गति कम होने के साथ ही मुद्रास्फीति की खाई कम हो जाती है।

(IV) इस सिद्धान्त की आलोचना इस आधार पर भी की जाती है कि यह केवल प्रवाह आय, वर्तमान आय, व्यय, उपभोग और बचत से संबंधित है, हालांकि कीमतों में वृद्धि न केवल वर्तमान वस्तुओं पर बल्कि बाजार में पहले से ही मौजूद स्टॉक को प्रभावित करती है। इस बिन्दु को सिद्धान्त में अनदेखा किया गया है।

उपरोक्त आलोचनाओं के बावजूद मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में पूर्ण रोजगार स्तर पर ~~कीमतों में वृद्धि~~ बढ़ती कीमतों और नीतिगत उपायों की व्याख्या करने में मुद्रास्फीति अन्तराल (की खाई) की अवधारणा काफी महत्वपूर्ण साबित हुई है।

उपरोक्त विश्लेषण से 'स्फीतिक अन्तराल, कारण, प्रभाव और उसके नियंत्रण के उपाय स्पष्ट हो जाते हैं।

<u>कुछ उपयोगी बातें</u>!

'Inflationary Gap', अर्थात् स्फीतिक अन्तराल या खाई की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब वस्तुओं और सेवाओं की माँग उत्पादन से अधिक हो जाती है जैसे कि समग्र रोजगार के उच्च स्तर, व्यापार गतिविधियों में वृद्धि या सरकारी व्यय। इससे वास्तविक जी०डी०पी० संभावित जी०डी०पी० से अधिक हो जाता है फलस्वरूप एक मुद्रास्फीति अन्तर हो सकता है। स्फीतिक अन्तराल नाम इसलिए दिया गया कि वास्तविक जी०डी०पी० में सापेक्ष वृद्धि के कारण अर्थव्यवस्था में खपत बढ़ जाती है -- जिसके कारण कीमतें लंबे समय तक बढ़ती हैं। यहाँ महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मुद्रास्फीति को महत्वपूर्ण मानने के लिए मौजूदा वास्तविक जी०डी०पी० अर्थव्यवस्था, पूर्ण-रोजगार जी०डी०पी० से अधिक होना चाहिए।

जब अर्थव्यवस्था का विस्तार हो रहा हो तो मुद्रास्फीतिक अन्तर व्यापार चक्र के बिन्दु को दर्शाता है। अन्य प्रकार का आउटपुट अन्तर मंदी की खाई है -- जो पूर्ण रोजगार संतुलन से नीचे की अर्थव्यवस्था का वर्णन करता है। मैक्रो अर्थशास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार, माल बाजार वास्तविक जी०डी०पी० के स्तर को निर्धारित करता है, जिसे निम्नलिखित संबंधों में दर्शाया गया है:

P-4

$$Y = C + I + G + NX$$

जहाँ, Y = वास्तविक जी०डी०पी०
C = (स्वयं खर्च) ~~निवेश~~ उपभोग
I = निवेश
G = सरकारी व्यय (खर्च) .
NX = शुद्ध निर्यात .

उपभोग व्यय, निवेश, सरकारी व्यय या शुद्ध निर्यात में वृद्धि से वास्तविक जी०डी०पी० का समय में बढ़ती है। वास्तविक जी०डी०पी० मुद्रास्फीति या अपस्फीति के प्रभावों को मापा करते हुए आर्थिक गतिविधियों का एक उपाय प्रदान करता है फलस्वरूप वास्तविक आर्थिक विकास और अर्थव्यवस्था के भीतर माल एवं सेवाओं की कीमतों में स्तर या धारणा बदलाव के बीच अन्तर के लिए रखा जाता है।